उन्नत प्रौद्योगिकी केन्द्र को डॉ0 राजा रमन्ना की स्मृति में समर्पित करने के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

17 दिसंबर, 2005
इंदौर

परमाणु ऊर्जा विभाग के उन्नत प्रौद्योगिकी केन्द्र का नाम बदलकर राजा रमन्ना उन्नत प्रौद्योगिकी केन्द्र रखने के इस समारोह में शामिल होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। आज सिंकोट्रोन रेडियेशन सोर्स इंडस-II को राष्ट्र को समर्पित करने का सम्मान भी मुझे प्राप्त हो रहा है।

जैसा कि पंडित नेहरू ने कहा था, वैज्ञानिक संस्थाएं आधुनिक भारत के मंदिर हैं और ये राष्ट्र के विकास और राष्ट्र निर्माण के वृहत कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को देश में और विश्वभर में आत्म-निर्भर और उत्कृष्ट उपलब्धि के एक देदीप्यमान उदाहरण के रूप में पहचाना गया है।

इस कार्यक्रम को डॉ0 होमी भाभा, डॉ0 होमी सेठना जैसे कालजयी वैज्ञानिकों और डॉ0 पी.के.अयंगर, डॉ0 एम.आर. श्रीनिवासन, डॉ0 आर. चिदंबरम और इस आयोग के वर्तमान अध्यक्ष डॉ0 काकोडकर जैसे निष्ठावान वैज्ञानिकों के समर्पित कार्यों का लाभ मिला है।

डॉ0 राजा रमन्ना उत्कृष्ट वैज्ञानिकों की इस आकाशगंगा के एक चमकते सितारे थे। भारत के विख्यात सपूत के रूप में उन्होंने देश में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दीं जिसमें परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष और रक्षा राज्य मंत्री के पद भी शामिल हैं। डॉ0 रमन्ना सर्वज्ञान-संपन्न व्यक्ति थे। विज्ञान के मोर्चे पर महारत हासिल करने के साथ- साथ, वे निपुण पियानोवादक थे और गीता और उपनिषदों जैसे महान भारतीय धार्मिक ग्रंथों का ज्ञान भी रखते थे। उन्हें पश्चिमी और भारतीय शास्त्रीय संगीत दोनों का गहरा ज्ञान था। वे अद्वितीय गुणों वाले नेता भी थे जिन्होंने वैज्ञानिकों की पीढ़ियों को प्रेरणा दी। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के प्रशिक्षण विद्यालय, जिसे 1957 में स्थापित करने में उन्होंने मदद दी, परमाणु ऊर्जा विभाग के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। डॉ0 राजा रमन्ना स्वतः प्रवृत्ति वाले एक महान आकर्षक व्यक्ति थे। व्यक्तिगत तौर पर, उन्हें जानना मेरे लिए सौभाग्य और खुशी की बात थी।

डॉ0 रमन्ना भारत के परमाणु कार्यक्रम की मुख्य उपलब्धियों से संबद्ध रहे थे। वे देश के पहले अनुसंधान रियेक्टर *अप्सरा* के निर्माण में भी भागीदार थे। उनकी पहल पर कोलकाता में वैरियेबल एनर्जी साईक्लोट्रोन का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया था। उन्होंने 1970 और 1980 के दशकों में देश के फास्ट रियेक्टर कार्यक्रम को भी प्रोत्साहित किया। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के निदेशक के रूप में वे उस दल के अगुआ बने जिसने 1974 में भारत के प्रथम परमाणु परीक्षण कार्यक्रम का संचालन किया था। वर्ष 1978 और 1981 के बीच वे रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार थे।

डॉ0 रमन्ना ने सन् 1974 में इसी उन्नत प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना करने में सहायता की। उन्नत प्रौद्योगिकी, विशेषकर लेज़र और एस्सीलरेटर के क्षेत्रों की उन्नत प्रौद्योगिकी में महारत हासिल करने के विचार से यह केंद्र स्थापित किया गया था। इस केंद्र द्वारा हासिल की गई प्रगति डॉ0 रमन्ना की सोच को सही साबित करती है। उनके दृष्टिकोण ने देश की जरूरतों में योगदान करने के साथ-साथ भारत को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु मानचित्र पर स्थान दिलाया। इस केंद्र ने अत्यन्त उच्च गुणवत्ता वाले घटकों और विश्व के सबसे बड़े पार्टिकल एक्सीलरेटर, द लार्ज हेड्रोन कॉलीडर, जिसकी स्थापना सीईआरएन द्वारा जेनेवा में की जा रही है, उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

हमारे वैज्ञानिकों की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय क्षमताएं विश्वभर की सर्वोत्तम क्षमताओं के समकक्ष हैं। इससे हमें भारत से बाहर की दुनिया के साथ तथा विश्व के सर्वाधिक उन्नत देशों के साथ बराबर के सहयोगी के रूप में अधिकाधिक आदान-प्रदान करने का आत्म-विश्वास मिलता है। अभी पिछले सप्ताह ही भारत, आईटीईआर- इंटरनेशनल थर्मोन्यूक्लियर एक्सपेरिमेंटल रियेक्टर प्रोजेक्ट में भाग ले रहे कुछ चुनिंदा देशों के समूह में शामिल हुआ और मैं इस उपलब्धि के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग को बधाई देता हूं।

मुझे आशा है कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ रचनात्मक बातचीत के जरिए हम जल्दी ही भारत और अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों के बीच पूर्ण नागरिक परमाणु सहयोग की मुख्यधारा का हिस्सा होंगे। परमाणु अप्रसार की नीति पर चलने का हमारा उल्लेखनीय रिकार्ड और हमारे वैज्ञानिकों का परमाणु ऊर्जा के सभी अनुप्रयोगों का लाभ उठाने में, देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में, हमारी बढ़ती परमाणु आवश्यकता को पूरा करने में और संपूर्ण वैश्विक वैज्ञानिक प्रगति के महान गौरव के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के प्रयासों में, भारत की स्थिति को और महत्वपूर्ण ही बनाएगा। उत्कृष्टता की इस यात्रा में राजा रमन्ना उन्नत प्रौद्योगिकी केन्द्र को एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होगी।

मैं इस अवसर पर आपको— परमाणु ऊर्जा विभाग परिवार के सदस्यों को— यह बताना चाहता हूँ कि आपकी प्रतिबद्धता और आपके वैज्ञानिक कार्यों के लिए पूरा राष्ट्र आपका कृतज्ञ है और आपकी बहुत सराहना करता है। आपको आपके प्रयासों में हमेशा हमारा पूर्ण और भरपूर सहयोग मिलता रहेगा।